मेरा नाम गैबिटो है

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़

का जीवन

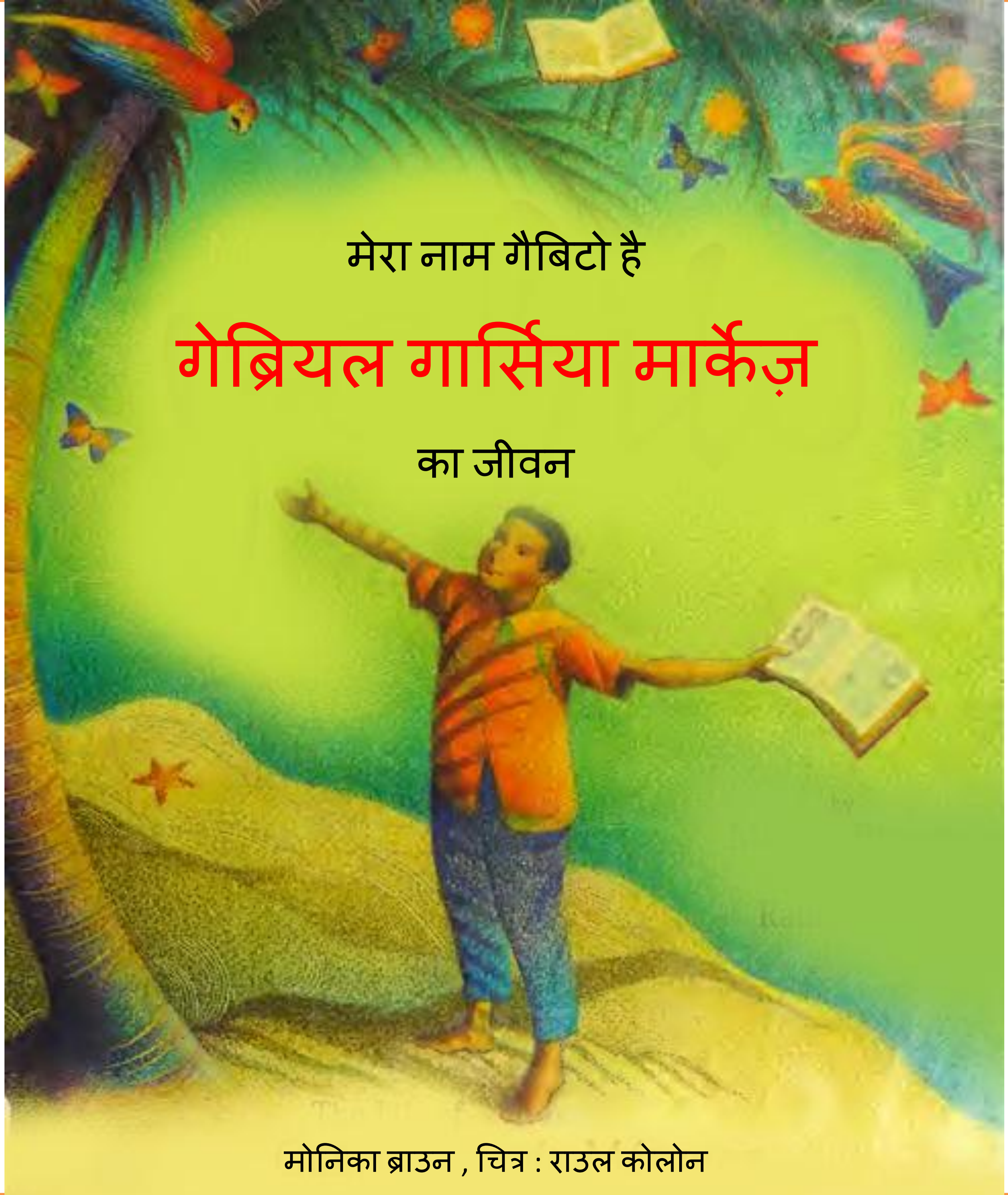

मोनिका ब्राउन , चित्र : राउल कोलोन

क्या आप जादू के कालीन पर बैठकर हवा में उड़ने की कल्पना कर सकते हैं?

एक बार, गैबिटो नाम का एक छोटा लड़का था जिसने ऐसी कल्पना की थी.

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़ शायद हमारे समय के सबसे शानदार लेखकों में से एक हैं. वह अपने शब्दों से दुनिया बुनते हैं और अपने पाठकों को उनके दैनिक जीवन में पाए जाने वाले जादू को देखने के लिए प्रेरित करते हैं. वो एक जबरदस्त शख्सियत हैं, और बेहद कुशल शब्द शिल्पी हैं. लोग उनकी बेहद प्रशंसा करते हैं. यह उनकी कहानी है. बच्चे उसका प्रेम से आनंद ले सकेंगे. उनके उपन्यासों की इमेजरी का उपयोग करते हुए, पुरुस्कृत लेखका मोनिका ब्राउन ने उपन्यासकार के जीवन को कोलंबिया में बिताए बचपन से वर्तमान काल तक दर्ज़ किया है. यह कल्पना और सुंदरता से भरे एक प्रेरक जीवन की मधुर कहानी है.

मेरा नाम गैबिटो है

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़

का जीवन

क्या आप किसी दुर्घटनाग्रस्त जहाज के नाविक की, आठ दिनों तक हवा और
समुद्री शैवाल पर ज़िंदा रहने की कल्पना कर सकते हैं?
क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि पीली तितलियाँ
प्रेम के गीतों पर अपने पंख फड़फड़ाती होंगी?
क्या आप सोने और चांदी की मछलियों के हवा
में तैरने की कल्पना कर सकते हैं?

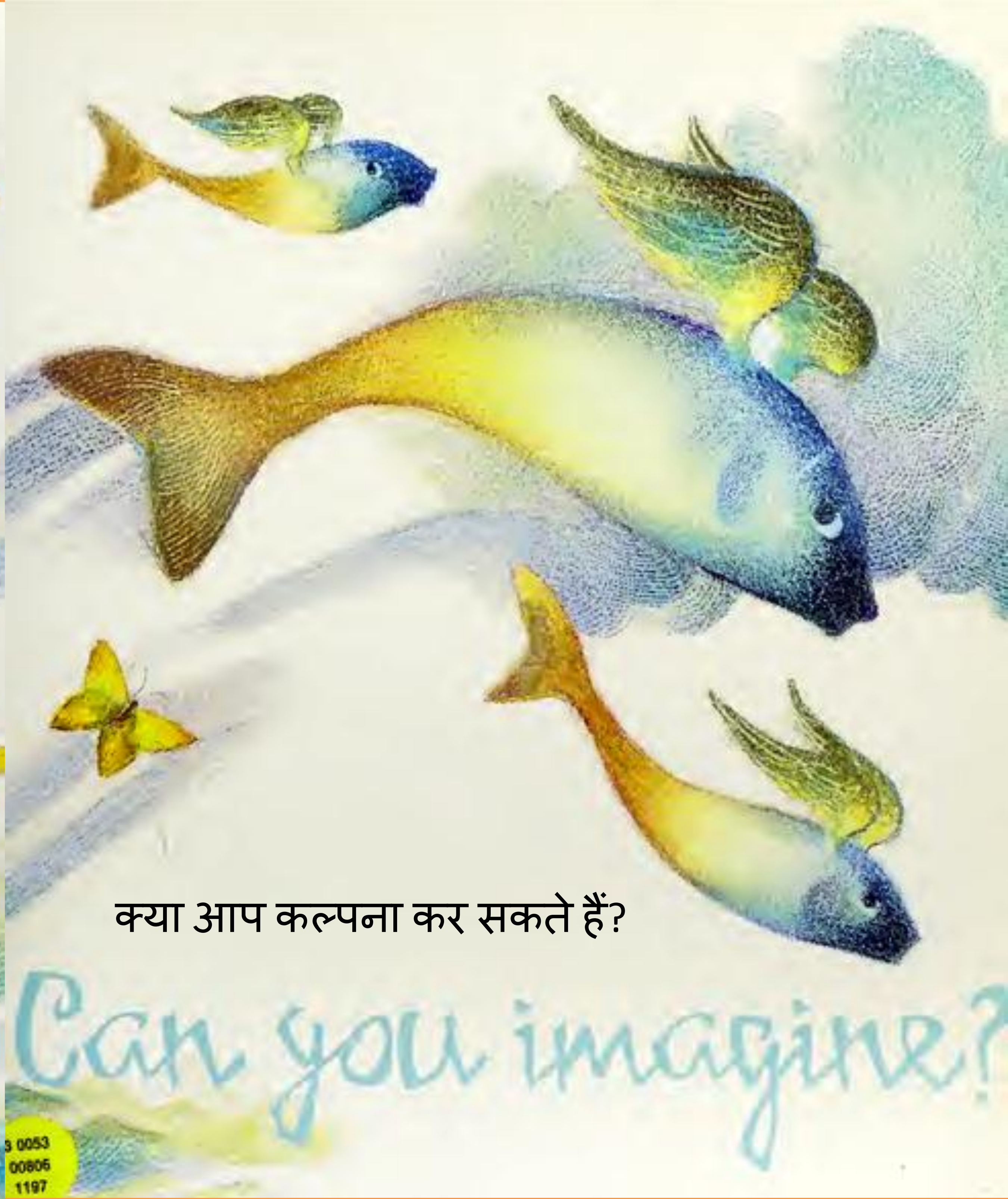

क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

3 0053 00806 1197

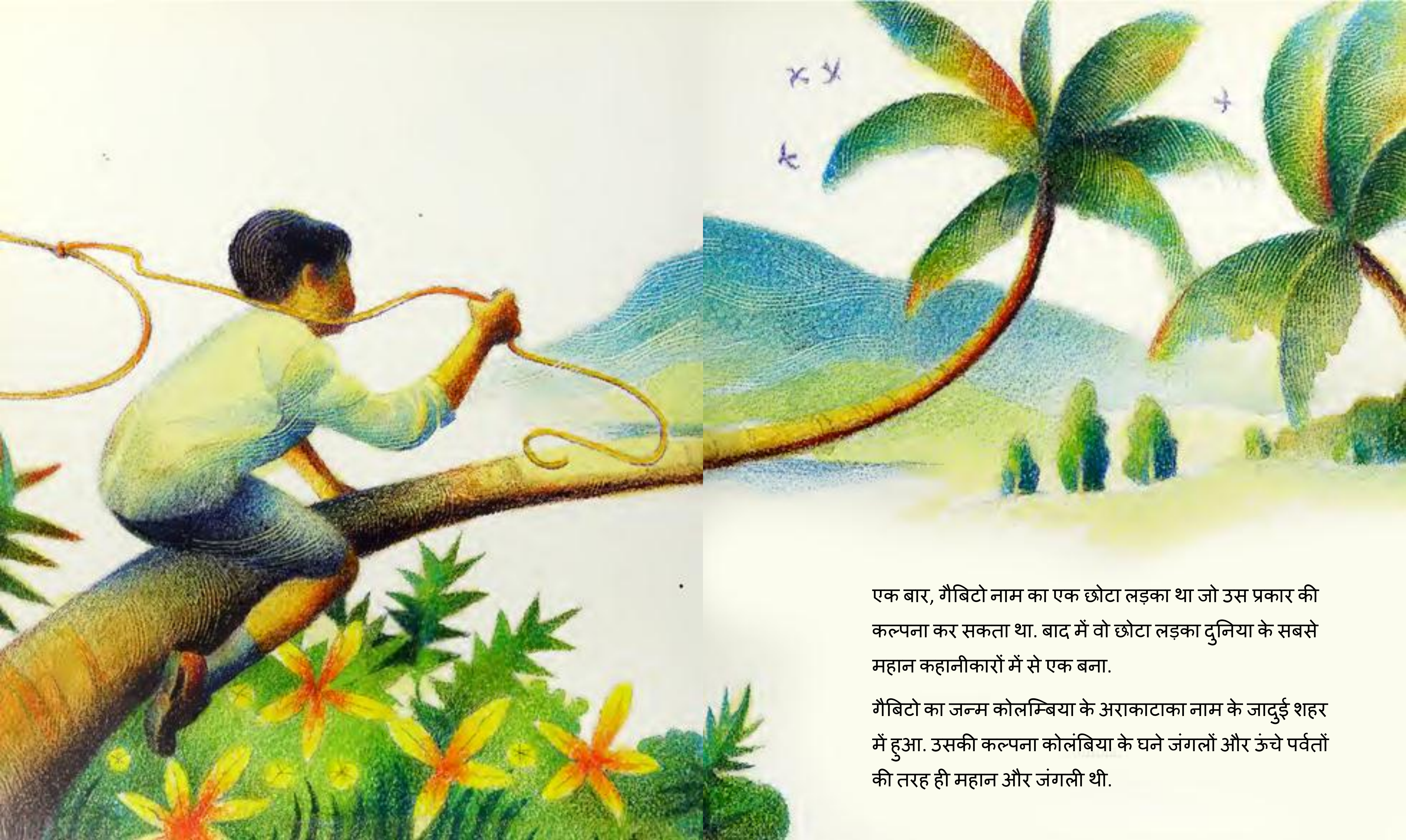

एक बार, गैबिटो नाम का एक छोटा लड़का था जो उस प्रकार की कल्पना कर सकता था. बाद में वो छोटा लड़का दुनिया के सबसे महान कहानीकारों में से एक बना.

गैबिटो का जन्म कोलम्बिया के अराकाटाका नाम के जादुई शहर में हुआ. उसकी कल्पना कोलंबिया के घने जंगलों और ऊंचे पर्वतों की तरह ही महान और जंगली थी.

गैबिटो के लिए, दुनिया एक जादुई जगह थी. वो अपने बड़े परिवार के साथ एक छोटे से घर में पला-बढ़ा. दादी के अनुसार, गैबिटो ने बचपन में एक अजीब और रहस्यमय भूत की कल्पना की थी. गैबिटो की कल्पना में, कभी-कभी एक महिला भूत, घर में ग्लाइड करके आती थी और कमरे में पड़ी खाली रॉकिंग चेयर को हिलाती थी!

आगे - पीछे. आगे - पीछे.

गैबिटो उस जादुई कुर्सी पर कभी नहीं बैठाता था क्योंकि वो भूत को कुचलना नहीं चाहता था.

गैबिटो में गज़ब की कल्पनाशक्ति थी.

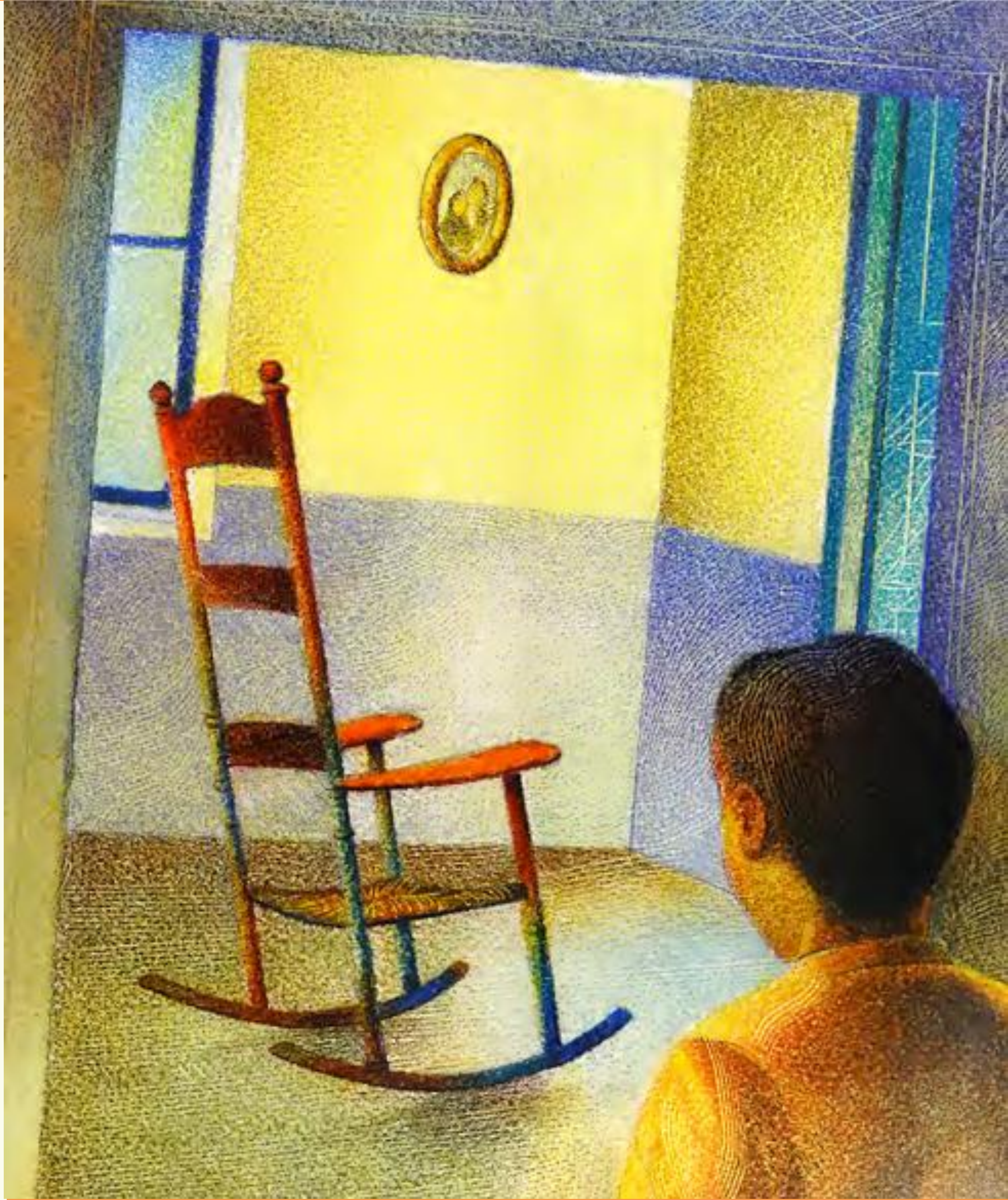

गैबिटो, एक 100 साल बूढ़े बात करने वाले तोते - लोरेंजो द मैग्निफिसेंट के साथ रहता था. लोरेंजो भी गैबिटो की तरह ही अपनी खुद की कहानियां बनाता था. और कभी-कभी उसकी कहानियाँ सच भी निकलती थीं!

एक दिन गैबिटो ने लोरेंजो की नई कहानी सुनी. एक बड़े गुस्सैल बैल ने अपनी बंधी रस्सी ढीली की. फिर वो क्रोधित सांड उसकी रसोई में से होकर भागा! गैबिटो को लगा कि शायद लोरेंजो द मैग्निफिसेंट के पास कोई जादुई शक्ति हो!

गैबिटो की कल्पना जंगली थी.

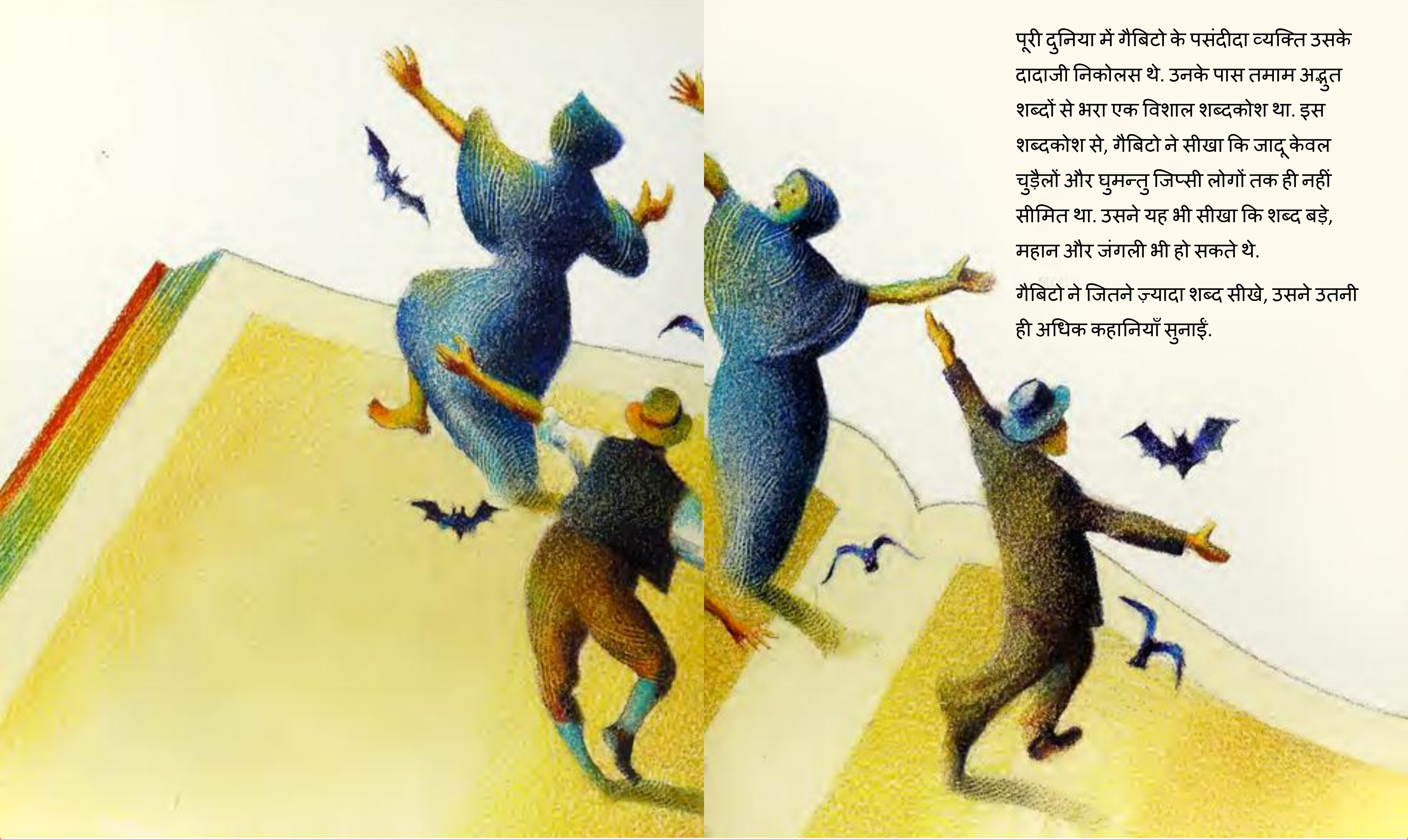

पूरी दुनिया में गैबिटो के पसंदीदा व्यक्ति उसके दादाजी निकोलस थे. उनके पास तमाम अद्भुत शब्दों से भरा एक विशाल शब्दकोश था. इस शब्दकोश से, गैबिटो ने सीखा कि जादू केवल चुड़ैलों और घुमन्तु जिप्सी लोगों तक ही नहीं सीमित था. उसने यह भी सीखा कि शब्द बड़े, महान और जंगली भी हो सकते थे.

गैबिटो ने जितने ज़्यादा शब्द सीखे, उसने उतनी ही अधिक कहानियाँ सुनाईं.

हर दिन नाश्ते के बाद, गैबिटो और उसके दादाजी मैचिंग टोपियां पहनते थे. फिर वे एक-दूसरे के हाथ पकड़कर, चमेली के फूलों को सूंघते हुए अराकाटाका शहर में घूमते थे. वे दोनों खुशी-खुशी एक कैफे की ओर जाते थे, जहाँ दादाजी के दोस्त दोपहर के भोजन के लिए उनका इंतज़ार कर रहे होते थे. दादाजी हमेशा गैबिटो को ठन्डे पानी के जग में हाथ डुबोने देते थे और उसमें से बर्फ के टुकड़े बाहर निकालने देते थे.

गैबिटो जितने अधिक लोगों से मिला उसने उन्हें उतनी ही अधिक कहानियाँ सुनाईं.

कभी-कभी गैबिटो और उसके दादाजी शहर के किनारे पर स्थित बड़े केले के बागानों के पास से गुजरते थे. वे बागानों में मज़दूरों को बड़ी मेहनत से केले तोड़ते हुए देखते थे. नन्हे गैबिटो को यह ठीक नहीं लगता था कि मेहनत करने वाले वे मज़दूर इतने गरीब क्यों थे. वो सोचकर गैबिटो दुखी होता था. गैबिटो ने एक ऐसी दुनिया की कल्पना करने की कोशिश की, जहां कोई भी गरीब न हो और जहां हर कोई अपने दादा-दादी के साथ एक पेड़ की छाया में उनका हाथ पकड़कर बर्फ के टुकड़ों को कुतर सके.

गैबिटो ने जितनी ज़्यादा चीजें देखीं, उसने उतनी ही अधिक कहानियां सुनाईं.

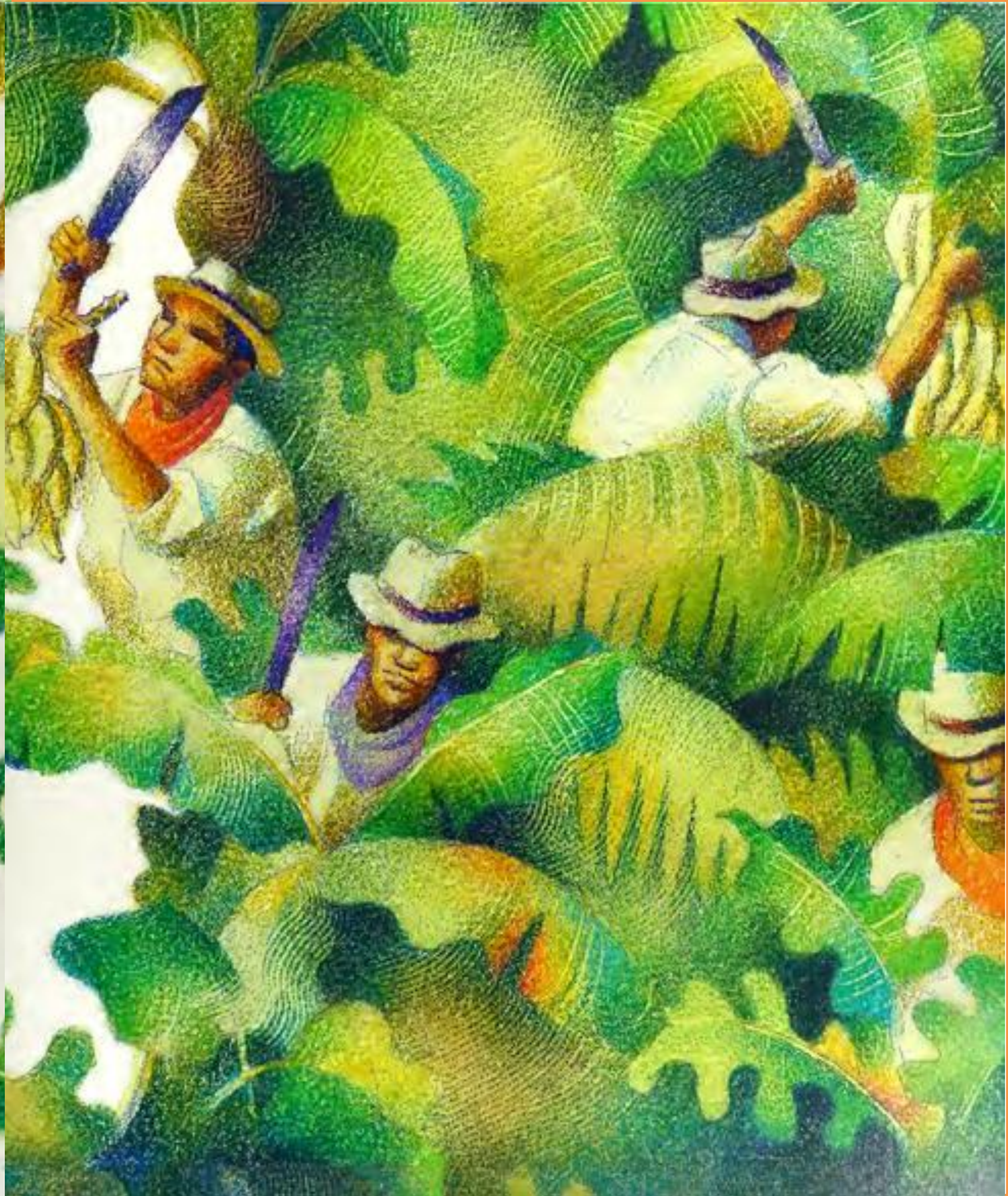

शायद तेज धूप के कारण गैबिटो की ऊंचाई जल्दी ही बढ़ गई. उसने सीखा कि भूत असली होते हैं, कि तोते कभी-कभी सच बोलते हैं, और जादुई दुनिया में भी चीज़े हमेशा निष्पक्ष नहीं होती हैं. उसने एक बेहद महत्वपूर्ण बात सीखी - उसे कहानियाँ पसंद थीं. उसे कहानियाँ सुनना, पढ़ना, सुनाना और लिखना बहुत अच्छा लगता था. वो एक ऐसी दुनिया गढ़ना चाहता था जहां असंभव, संभव हो सके, जहां सपने सच हों, और जहां लोग तैर सकें और उड़ सकें.

उसने जितनी अधिक कहानियाँ लिखीं, उसने उतनी ही अधिक कहानियां लिखना चाहीं.

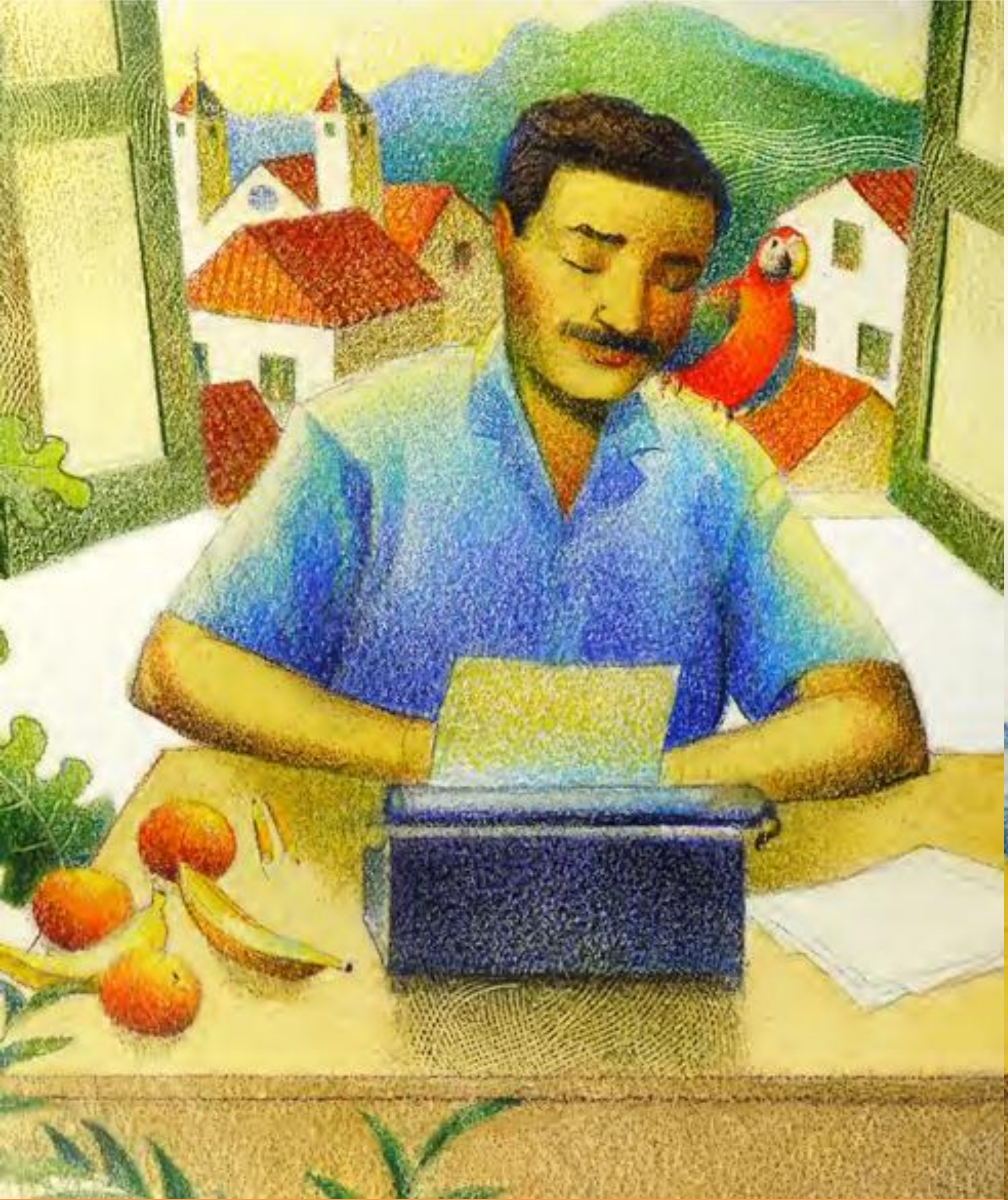

जब गैबिटो बड़ा हुआ तो उसने दुनिया की सबसे रोमांचक कहानियाँ लिखीं.
उसकी कहानियाँ जादुई और अद्भुत तो थीं हीं, लेकिन उनमें वास्तविक भी थीं.

ज़रा कल्पना करें कि गैबिटो ने किस तरह की कहानियाँ लिखी होंगी?

आंखे बंद करके देखें.

क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

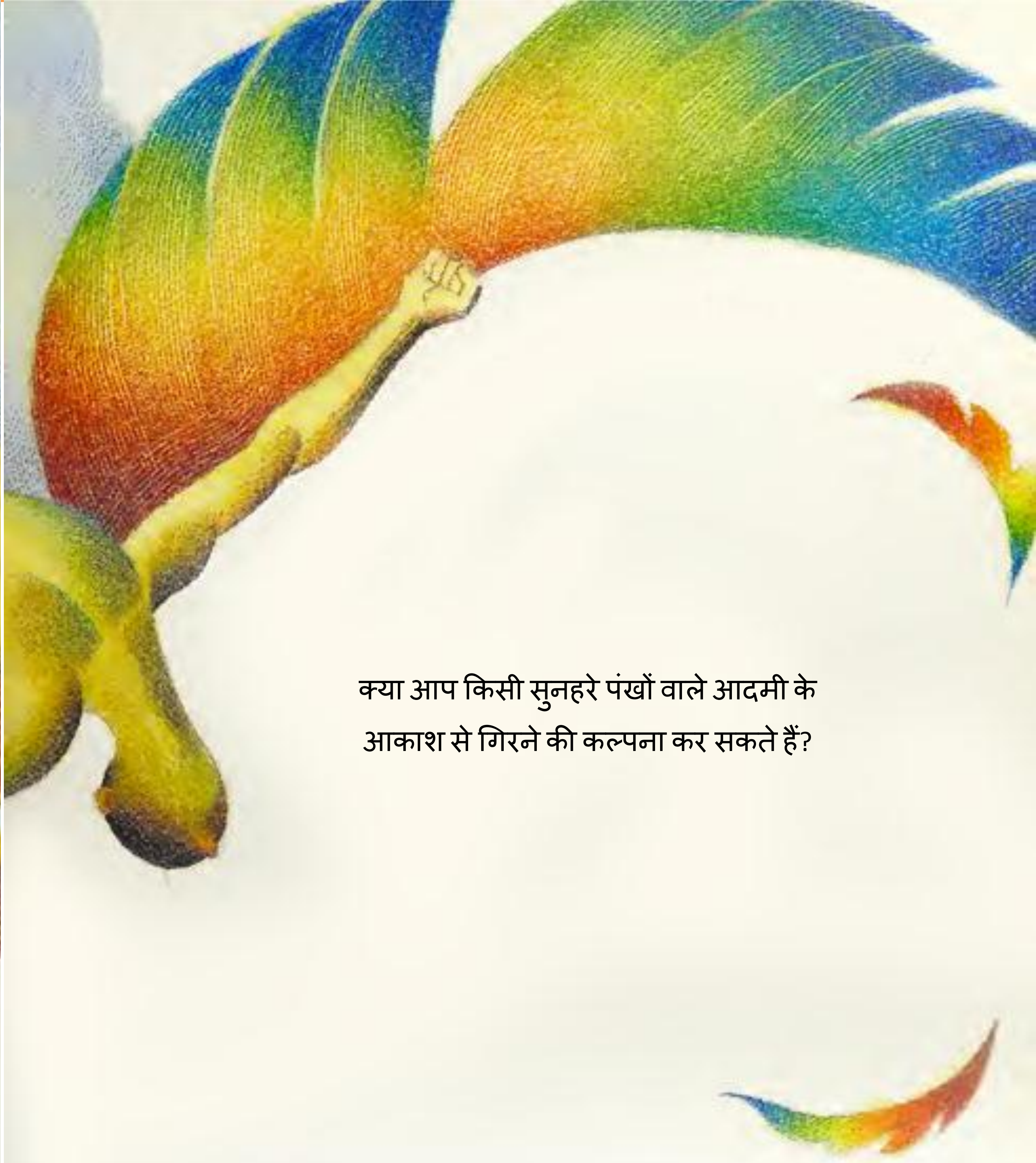

क्या आप किसी सुनहरे पंखों वाले आदमी के
आकाश से गिरने की कल्पना कर सकते हैं?

क्या आप दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला की कल्पना कर सकते हैं?

ज़रा कल्पना करें?

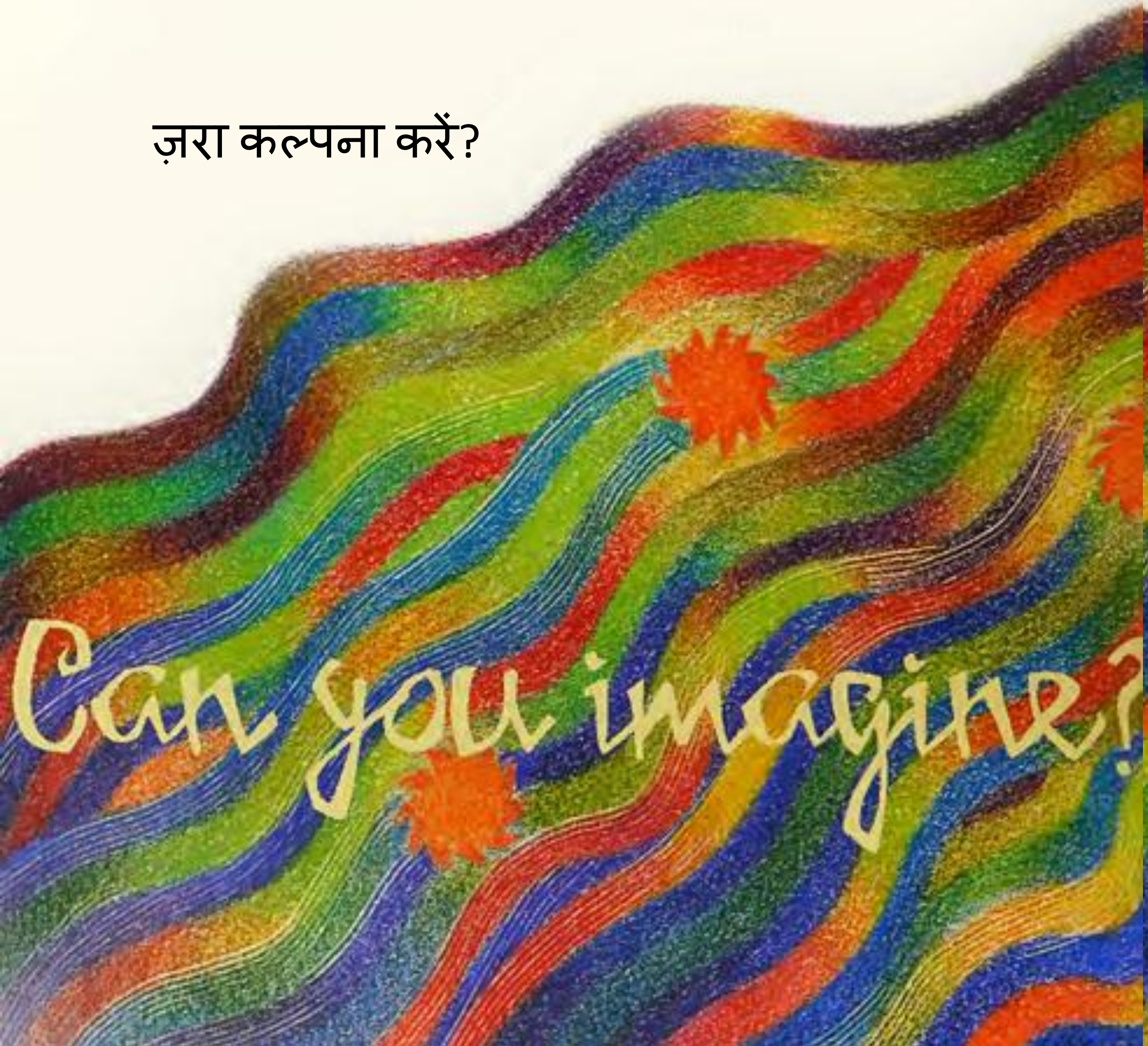

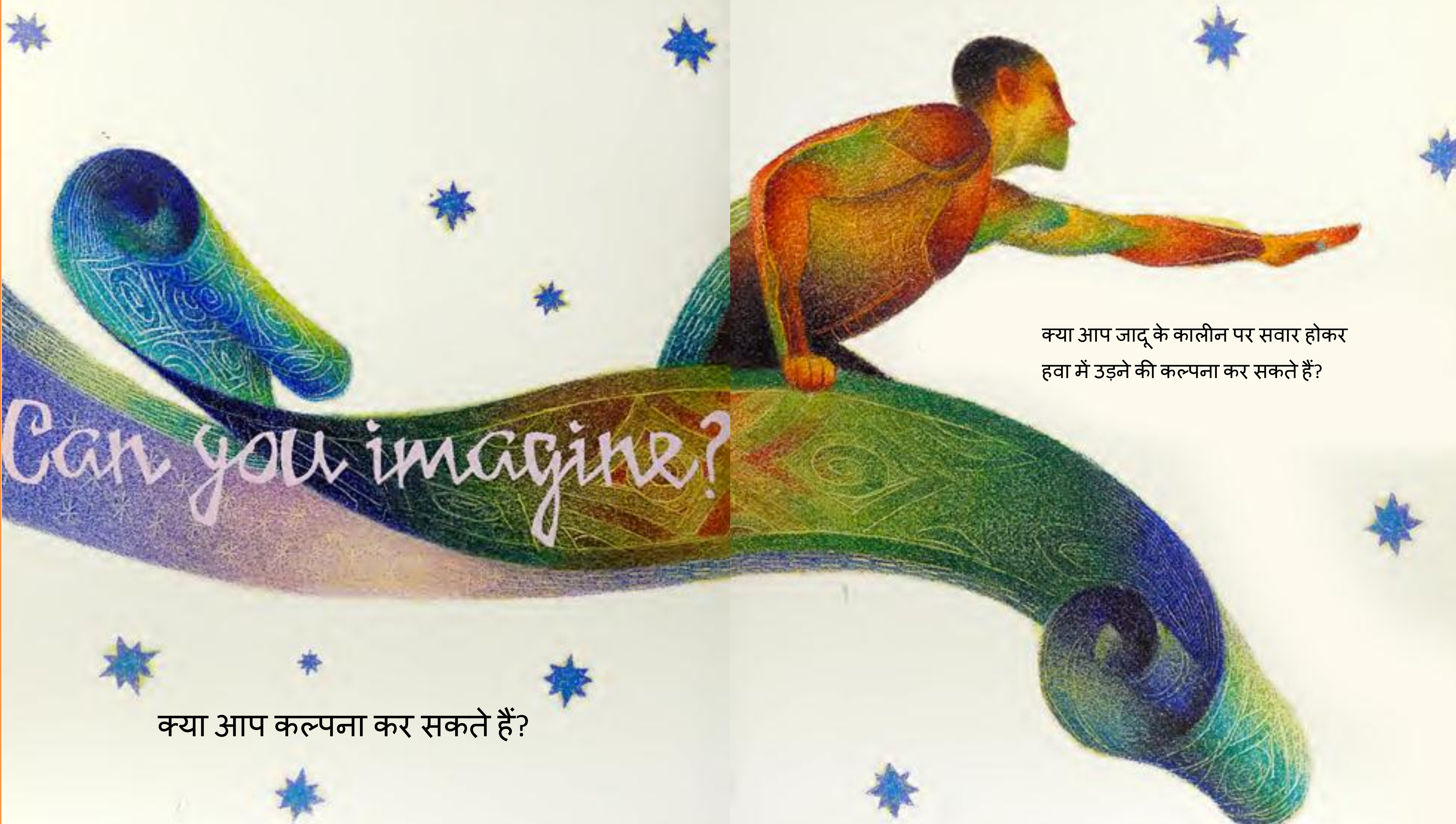

क्या आप जादू के कालीन पर सवार होकर हवा में उड़ने की कल्पना कर सकते हैं?

क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

अगर ये कहानियां जादुई प्रतीत होती हैं तो ऐसा इसलिए है क्योंकि वे वाकई में जादुई हैं. और उन्हें गैबिटो नाम के लड़के ने लिखा था, जो बड़ा होकर गैब्रियल गार्सिया मार्केज़ नाम का महान कहानीकार बना. लाखों लोगों ने उसे पढ़ा और सभी ने उसे पसंद किया. लेकिन गैबिटो तोते, बैल, चमेली के फूल और केले बागान के मज़दूरों, और अद्भुत शब्दों से भरे उस शब्दकोश को कभी नहीं भूला.

सात महाद्वीपों के लोगों ने उसकी कहानियों को पढ़ा और उन्हें बेहद पसंद किया. लोगों ने अपनी दुनिया को खोजा और पाया कि वो कितनी जादुई, बड़ी, महान और जंगली हो सकती थी.

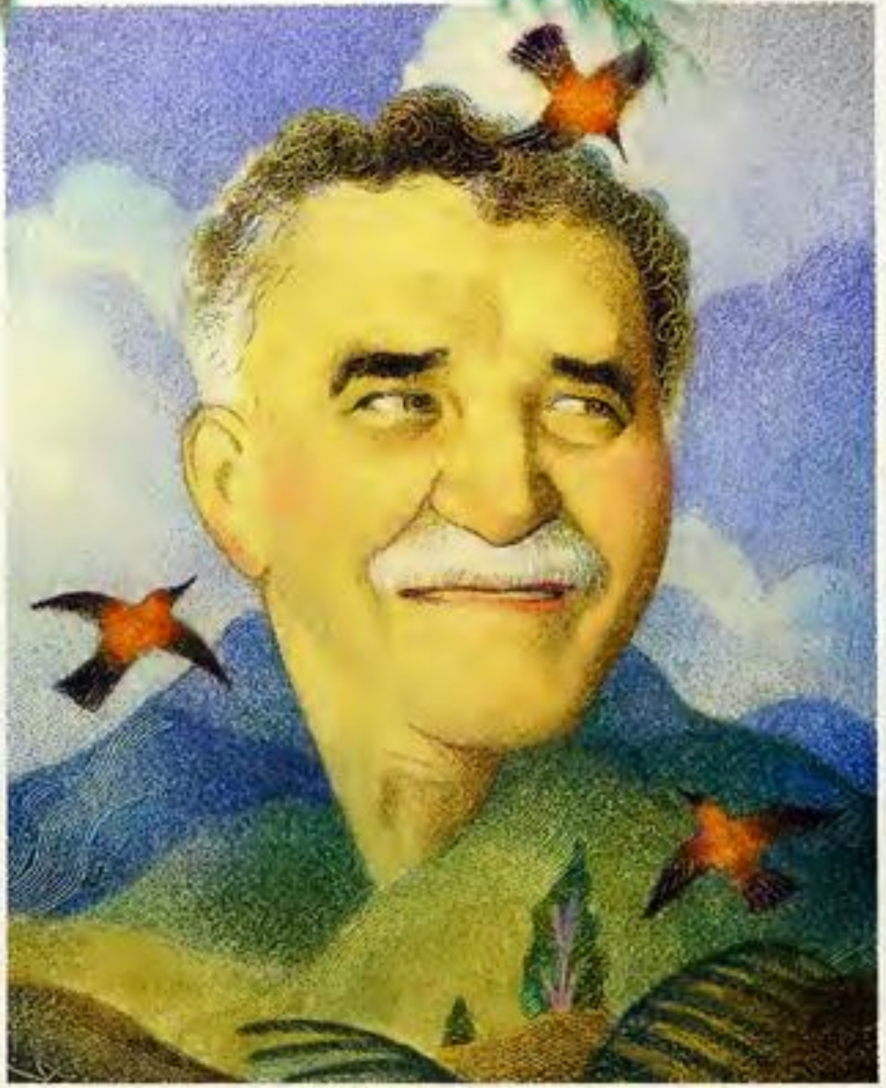

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़ के पास एक महान कुशलता थी. वो एक कहानीकार थे. 6 मार्च, 1928 को जन्मे गेबियल का उपनाम गैबिटो था. वो उत्तरी कोलंबिया के एक शहर, अराकाटाका में पैदा हुए थे. गैबिटो का पालन-पोषण उसके दादा-दादी ने किया. उसका घर भाइयों, बहनों, और लोरेंजो द मैग्निफिसेंट नाम के एक 100 वर्षीय तोते से भरा था. गैबिटो ने अपने दादा-दादी से बहुत कुछ सीखा. वे खुद बढ़िया कहानियां सुनाते थे.

बाद में गैबिटो ने एक पत्रकार और एक उपन्यासकार जैसे भी काम किया. अन्य स्थानों के अलावा वो यूरोप, अमेरिका और मैक्सिको में रहे. 1958 में उन्होंने अपने बचपन की प्रेमिका, मर्सिडीज पार्डो से शादी की, और उनके दो बेटे हुए, रोड्रिगो और गोंजालो.

गैबिटो का प्रारंभिक जीवन, गरीब केले बागान के मज़दूर संघर्ष से प्रभावित हुआ. उनका विश्वास मज़दूरों की निष्पक्ष लड़ाई में था. यहां तक कि दुनिया के सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक बनने के बाद भी गैबिटो मज़दूरों को कभी नहीं भूले, और अपनी कहानियों और उपन्यासों में उन्होंने हमेशा उनका उल्लेख किया.

गेब्रियल गार्सिया मार्केज़ ने "लव इन द टाइम ऑफ़ कॉलरा" (1988) सहित तीस से अधिक पुस्तकें लिखीं. "लिविंग टू टेल द टेल" (2003), और उनका सबसे शानदार उपन्यास, "वन हंड्रेड इयर्स ऑफ सॉलिट्यूड" (1967). 1982 में उन्हें साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया. उनकी कहानियां पूरी दुनिया में पसंद की जाती हैं. उन्होंने ज़्यादातर कोलंबिया के बारे में लिखा, जिसमें उन्होंने लोगों और स्थानों की कहानियों सुनाईं जो जादुई और वास्तविक दोनों थीं. अंत में वो मेक्सिको सिटी में रहे. 17 अप्रैल 2014 को उनका निधन हुआ.

समाप्त